RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-09
September-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारतीय जीवन मूल्य और हिंदी कथा साहित्य

Dr. PADMA

Assistant Professor, Department of Hindi, M.P. college For women

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 07 September 2018

Keywords
भारतीय जीवन मूल्य, कथा, मूल्य

ABSTRACT

जीवन के साथ जुडा शब्द है 'मूल्य' । चिंतन के क्षेत्र में तो इस शब्द का प्रयोग हमेशा होता है। व्यावहारिक रुप में भी इस शब्द का प्रयोग होता है । आदर्श और मूल्य में भी सूक्ष्मतम फर्क है। व्यावहारिक "मूल्य" शब्द 'मापने की कसौटी' के तौर पर प्रयोग किया जाता है, पर यहाँ 'मूल्य' यानी संपूर्ण मानवी व्यवहार से अभिप्रेत है। 'मूल्य' शब्द गौरवता को दर्शाता है। इसे ही अंग्रेजी में वैल्यूज कहा जाता है। संस्कृत के आधारपर 'मूलेन समोमूल्य' कह सकते है। अर्थपरिवर्तन के कारण इस शब्द में बड़ी व्यापकता पाई जाती है। संक्षेप में गुणों को मूल्य कह सकते है।

भूमिका

हमारा साहित्य भले वो किसी भी भाषा में हो उसमें मूल्यों के दर्शन होते है। साहित्य और मूल्यों का अटूट रिश्ता है। साहित्य में प्राचीन काल से ही मूल्यों का विवरण हम देखते है। प्राचीन काल के साहित्य में हमें भगवान श्रीकृष्ण या आदर्शनोमुखी राम का गुण वर्णन दिखाई देता है। इन रुपों द्वारा आदर्श व्यक्तित्व में धैर्य, नीति, बुध्दि, वाक् चतुरता आदि शाश्वत मूल्य दर्शाये गये है।

मूल्यों का हमेशा आदर होना चाहिए, मूल्यों की रक्षा करना ही मनुष्यता का मुख्य धर्म है। जीवन में सौदर्य की स्थापना करनी हो तो उसमें मूल्यों का होना अतिआवश्यक है। मनुष्य ने अपना भौतिक विकास तो बहुत कर लिया है साथ उसे जीवन मूल्यों की भी उतनी ही आवशयकता होती है। मूल्य तो हमेशा परिवर्तित होते आए है। पुराने मुल्यों को छोड परिस्थितीनुरुप हमेशा नित नवीन मूल्यों को स्वीकारा गया है। आज मूल्यों का निर्माण स्वयं आदमी खुद अपने लिए कर रहा है। पर ऐसे भी मूल्य है जो चिरंतन शाश्वत रहे है। मूल्यो को अगर हम देखते है उसमें दो प्रकार के मूल्यों के मुख्य भेद नजर आते है।

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कथा-साहित्य दो सर्वथा अलग-अलग धाराओं में बँट गया था जिनका प्रतिनिधित्व क्रमश: यशपाल और अज्ञेय की रचनाएँ करती हैं। यशपाल की रचनाओं में सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन मिलता है तो अज्ञेय की रचनाओं में एक गूढ़ सांकेतिकता है , साथ ही भाषा का वह गुम्फन है जिससे भाषा की सामर्थ्य का विस्तार होता है। उपन्यास के क्षेत्र में 'मनुष्य के रूप' और 'नदी के द्वीप' इन दो सीमाओं का संकेत देते हैं तो कहानी के क्षेत्र में 'प्रतिष्ठा का बोझ ' एक दिशा है और 'साँप' दूसरी। परन्तु इन दोनों लेखकों और दोनों प्रतिनिधि धाराओं में एक बात सामान्य प्रतीत होती है और वह है अतिशय रूमानी वातावरण की सृष्टि का मोह। अन्तर केवल इतना है कि यशपाल यथार्थ की भूमि पर वर्तमान रहते हुए ऐसा करते हैं और अज्ञेय एक कल्पित भावुकतापूर्ण विश्व की सृष्टि करके उसके अन्दर जाकर। परन्तु स्त्री और पुरुष के निकट सम्बन्धों के वर्णन में दोनों की प्रतिभा रमती है। परिणामस्वरूप इन दोनों की रचना के निश्चित दायरे बन गये जिनके बाहर वे प्रयत्न करके भी नहीं निकल पाये। इस बीच जीवन ने कई करवटें लीं। समाज में कई तरह की हलचल और उथल-पुथल हुई। परन्तु उसने या तो इन्हें प्रभावित किया ही नहीं, और किया भी तो उन्होंने उससे उतना ही ग्रहण किया जो इनकी निश्चित परिधि में समा सकता था। जीवन के बहुमुखी यथार्थ को चित्रित करने की जिस परंपरा का प्रेमचन्द ने सूत्रपात किया था, वह लगभग अछूती ही पड़ी रही।

साहित्यकार अपनी वैयक्तिक कुंठाओं के कारण जब अपनी रचना से जनहृदय में स्पन्दन नहीं भर पाता तो वह अपनी असमर्थता को ढाँपने के लिए एक दर्शन की सृष्टि करता है। जिस रचना में अपने पैरों खड़े होने की सामर्थ नहीं होती, उसे आलोचना की छड़ी के सहारे खड़ा करने का प्रयत्न किया जाने लगता है। यह बात इस काल की रचनाओं–विशेषतया सांकेतिक शैली की रचनाओं के साथ हुई। इस काल की आलोचना को पढ़ें तो सम्भवत: यही प्रतीत होगा कि सृजन की दृष्टि से इतना सम्पन्न काल शायद और कोई नहीं रहा। परन्तु कम-से-कम गद्य के क्षेत्र में यह सम्पन्नता आलोचना की ही है , रचनात्मक साहित्य की नहीं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आज के युग की साहित्यिक अभिव्यक्ति में हम एक चीज़ की प्रमुखता देखते हैं और वह है बिम्ब और विचार का सामंजस्य –अर्थात् बिम्बों का ऐसा संगठन कि विचार उसके बीच से ही प्रस्फुटित हो, चरित्र और घटनाएँ कुछ ऐसे मूर्त चित्रों के रूप में प्रस्तुत की जाएँ कि वही लेखक के अभिप्राय या संकेत को स्पष्ट कर दें। प्रेमचन्द की रचनाओं में बिम्ब और विचार दोनों हैं, परन्तु दोनों का ऐसा गुम्फन कहीं-कहीं ही हो पाया है। प्रेमचन्द रचना के आन्तरिक गुण की अपेक्षा उसके उद्देश्य को ही महत्त्व देते थे , इसलिए ही ऐसा हुआ है। वे जितने सचेत इन्सान थे , उतने सचेत कलाकार नहीं। आज की नई कथा-कृतियों में , जिनमें से कुछ एक का उल्लेख पहले किया जा चुका है , इस तरह गुम्फन के कई सफल प्रयत्न दृष्टिगोचर होते हैं। 'बूँद और समुद्र' के लेखक ने यदि अपनी रचना में मथुरा की यात्रा का वर्णन करने और साथ एक आध्यात्मिक तत्त्व का समावेश करने का लोभ न किया होता तो गली-मुहल्ले के जीवन को चित्रित करने की दृष्टि से वह एक अन्यतम रचना होती। 'परती : परिकथा' का विन्यास काफी शिथिल है, परन्तु उसमें बिम्बों और विचारों को एक साथ प्रस्तुत करने की लेखक की अद्भुत शक्ति का परिचय मिलता है। इन लेखकों की कृतियों ने हिन्दी उपन्यास को यशपाल और अज्ञेय की अर्द्ध-रूमानी परंपरा से हटाकर एक नए मोड़ पर ला दिया है और एक नए और अधिक सशक्त रूप में जीवन के व्यापक और बहुमुखी यथार्थ को प्रस्तुत करने की दिशा में क़दम उठाया है। यह बात अपने में ही आगे की सम्भावनाओं का विश्वास दिलाने वाली है।

इन छः-सात वर्षों में उपन्यास की अपेक्षा कहीं अधिक हलचल कहानी के क्षेत्र में दिखाई दी है। इसका एक कारण शायद यह भी है कि नए कहानीकारों ने एक-दूसरे की होड़ में रचना करने का प्रयत्न किया और न केवल कई एक सशक्त और मँजी हुई कहानियों की सृष्टि की , बल्कि कहानी के क्षेत्र में नए मूल्यों की अवतारना भी कर दी। बिम्बों के माध्यम से अपनी जीवन-दृष्टि को व्यक्त करने और कला के गर्भ से सामाजिक जीवन को प्रगति और नव-निर्माण का संकेत देने के जैसे सफल और सार्थक प्रयत्न कहानी के अन्तर्गत हुए हैं , साहित्य की और किसी भी विधा के अन्तर्गत नहीं हो पाये। नई कविता का रूप-विधान एक निश्चित दिशा ग्रहण कर गया है , परन्तु नई कहानी की सबसे बड़ी सफलता इसी बात में रही है कि उसने एक निश्चित रूप या दिशा को न अपनाकर अलग-अलग कहानीकारों के हाथों कई दिशाओं में प्रगति की है। जीवन के कई नए खंडचित्र, जिनकी ओर न आज तक की कहानी ने मुँह किया था न कविता ने , आधुनिक कहानी के आश्रय से सजीव हो उठे हैं। आज के कहानीकार दो दृष्टियों से जीवन के व्यापक चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं। एक तो इस दृष्टि से कि उनके कहानी चुनने का क्षेत्र पहले से कहीं विशाल है। जीवन और समाज के बहुत दूर-दूर उपेक्षित और छिपे हुए कोनों तक उनकी दृष्टि अपने कथानक की तलाश में पहुँच जाती है। और दूसरे इस दृष्टि से कि छोटी से छोटी और साधारण से साधारण घटना को भी वे जीवन के विशाल सन्दर्भ में निश्चित आलोक देकर प्रस्तुत करते हैं। यही वजह है कि 'बदबू' जैसा साधारण कथानक भी आज के कहानीकार के हाथों कहीं अधिक सार्थक और प्रभावशाली हो उठता है।

भारतीय जीवन मूल्य और हिंदी कथा साहित्य

आधुनिक कहानी की चर्चा करते हुए एक और बात भी कही जानी चाहिए और वह यह कि उपन्यास के क्षेत्र में जिस संगठित शिल्प का विकास अभी तक सम्भव नहीं हुआ, वह कहानी के क्षेत्र में आज एक साधारण-सी बात हो गयी है क्योंकि नए कहानीकारों ने वैयक्तिक और सामूहिक रूप में कहानी के शिल्प को बहुत माँजा है। एक बड़ी बात यह भी है कि इन कहानीकारों ने दूसरी भाषा ओं के समृद्ध साहित्य के बने-बनाये नुस्खों को अपने लिए आदर्श मानकर रचना नहीं की। उन्होंने परंपरा से बहुत कुछ ग्रहण किया है, फिर भी उन्होंने अपने लिए सफलतापूर्वक नए मार्ग की खोज की है। और , विभिन्न कहानीकारों ने विभिन्न स्तरों पर खोज करते हुए अपने व्यक्तित्व की छाप भी नई कहानी को दी है। इसीलिए उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ नए नाम भी कहानी के क्षेत्र में सीमा-चिह्न से बन गये हैं।

परन्तु पुरानी पीढ़ी के कुछ लेखक और आलोचक नई कहानी से शिकायत करते हैं कि वह उन्हें उलझी हुई प्रतीत होती है। इसका मुख्य कारण यही है कि वे जिन कोष्ठों में रहकर सोचते हैं , उनमें अभी तक वही पुरानी दकियानूसी मान्यताएँ भरी पड़ी हैं। वे कहानी के शिल्प , संकेत या व्यापक कैनवस को ग्रहण ही नहीं कर पाते। इसलिए वे कहानी के कहानीपन , घटियापन और बढिय़ापन की शब्दावली में ही घूमकर रह जाते हैं या बहुत दूर जाएँ तो स्ट्रक्चर और टैक्सचर की बात करके रह जाते हैं। चरित्र-चित्रण के क्षेत्र में उन्हें करने की एक ही बात सूझती है कि लेखक ने कितने उदात्त चरित्रों की सृष्टि की है। वे इस बात को भूल जाते हैं कि कहानी के अन्तर्गत पहली चीज़

ही चरित्र है और सफल चरित्र-चित्रण का अर्थ है उन्हें उनकी अच्छाइयों और बुराइयों के साथ एक सजीवन और विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत करना। कहानी नि:सन्देह कुछ अभिजात, उदात्त और उदार व्यक्तियों की जीवनगाथा का नाम नहीं है। और , स्ट्रक्चर और टैक्सचर से पहली चीज़ कहानी का यार्न है , वह तन्तुवाय जो आज का यथार्थ है – एक व्यक्ति विशेष या समुदाय-विशेष के जीवन का यथार्थ नहीं, हमारे सामाजिक जीवन का यथार्थ, वह व्यापक यथार्थ जो इकाइयों से लेकर राष्ट्रों तक के संघर्षों के मूल में है। यह प्रसन्नता की बात है कि नई कहानी के अन्तर्गत उस व्यापक यथार्थ की चेतना ज़ोर पकड़ रही है और नई कहानी, आलोचना की सीमाओं के बावजूद , अपने रूप और आत्मा का और परिष्कार कर रही है।

प्रेमचन्द ने कहानी को एक दिशा दी थी और उनके बाद आने वाले लेखक उस दिशा में और भी बहुत आगे तक जा सकते थे। परन्तु प्रेमचन्द के तुरन्त बाद आनेवाली लेखकों की पीढ़ी ने अपनी दिशा बहुत बदल ली।

यह पीढ़ी नई-नई पाश्चात्य साहित्य के सम्पर्क में आयी थी। उस साहित्य की तब तक की उपलब्धियाँ इस पीढ़ी के लिए आदर्श बन गयीं। कुछ लेखकों ने प्रेमचन्द के शिल्प में त्रुटियाँ देखीं और शिल्प को ही सब कुछ मानकर उस क्षेत्र में विकास को ही सफलता की कसौटी मान लिया। जो अन्यत्र लिखा जा चुका था और बहुत सुन्दर था , उसके स्तर तक पहुँचने का प्रयत्न किन्हीं लेखकों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण बन गया। जिस लेखक को आसपास के जीवन की अपेक्षा अपने शेल्फ में रखी हुई पुस्तकें अधिक प्रेरित और अनुप्राणित करती थीं, वह भला प्रेमचन्द के मार्ग पर क्योंकर बढ़ता? परिणाम इस काल में कहानी की भाषा के परिमार्जन और उसके रूपविधान की ओर अधिक ध्यान दिया गया। इस दिशा में जैनेन्द्र और अज्ञेय की देन का विशेष रूप से उल्लेख किया जा सकता है। परवर्ती कहानीकारों ने जब इन लोगों की लकीर को छोड़ा तो वे भाषा और शिल्प के क्षेत्र में इनके प्रभाव को आत्मसात् किये हुए ही आगे बढ़े।

इस पीढ़ी के प्रमुख लेखकों में यशपाल दूसरों से काफ़ी अलग रहे। उन्होंने मध्यवर्ग के जीवन की विसंगतियों को लेकर उन पर आक्षेप करते हुए कई ज़ोरदार कहानियाँ लिखीं। परन्तु यशपाल का यथार्थ एकांगी यथार्थ था, जिसमें मनुष्य के सौन्दर्य और उसकी उदात्त वृत्तियों को आँख से ओझल रखा गया। यशपाल को नग्नता के चित्रण का बहुत आग्रह रहा, जो कई जगह एक फोबिया-सा प्रतीत होता है। क्या केवल कुत्सित मात्र ही यथार्थ है ? क्या उस मध्यवर्ग के जीवन में जो जल्दी-जल्दी अपनी कुंठाओं की केंचुलियाँ तोड़ रहा है , कोई भी उजली रेखा नज़र नहीं आती ? जिस मनुष्य से उसकी मनुष्यता का विश्वास ही छीन लिया जाएगा, उसे हम बदल क्योंकर सकेंगे ? मध्यवर्ग के जीवन में केवल खोखलापन और आडम्बर ही नहीं है , उसमें भी बहुत कुछ है जो सजीव है और विकाररहित है, और जिसकी रक्षा की जा सकती है। मध्यवर्ग में 'प्रतिष्ठा का बोझ' की सास-बहुएँ ही नहीं हैं , जिनकी एक मात्र समस्या उनकी शारीरिक भूख है , बल्कि वे स्त्रियाँ भी हैं जो धागे बीन-बीनकर अन्धी हो जाती हैं , केवल इसलिए कि अपने बच्चे को दस जमातें पढ़ा सकें। यशपाल के तीखे व्यंग्यों में यदि साथ ही उतनी सहानुभूति मिली रहती तो उनकी रचनाओं का महत्त्व अब से कहीं अधिक हो सकता था।

पिछले दस वर्ष में कहानी-लेखकों की जो नई पीढ़ी आगे आयी है , उसमें जीवन के प्रति ईमानदारी का अधिक प्रबल आग्रह है। इस पीढ़ी के लेखकों ने प्रेमचन्द के सूत्र को पकडक़र उनके मार्ग पर बढऩे का प्रयत्न भी किया है और कई नई पगडंडियाँ भी खोज निकाली हैं। पिछले दस वर्ष में हम सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन के जिस संक्रान्तिकाल में से गुज़रे हैं , उसकी नाना स्थितियाँ इस पीढ़ी की कला के विकास में सहायक भी हुई हैं और बाधक भी। सहायक इसलिए कि निरन्तर बदलते हुए जीवन ने इस पीढ़ी के लेखक की चेतना पर बार-बार चोट की है और उसको अपने वातावरण के प्रति प्रतिक्रियाशील बना दिया है। और बाधक इसलिए कि हिन्दी को प्राप्त हुई मान्यता के कारण रचना की माँग बढ़ जाने से कुछ लेखकों में व्यवसाय-बुद्धि ज़ोर पकड़ गयी और रचना के आन्तरिक मूल्य की अपेक्षा उसकी द्रव्यार्जन-शक्ति अधिक महत्त्वपूर्ण हो उठी। सम्पादकीय दृष्टि भी कुछ जगह द्रव्य-वितरण संस्थाओं के संचालकों की-सी दृष्टि हो उठी। परिणाम यह हुआ कि जहाँ इस पीढ़ी के लेखकों के एक वर्ग ने बहुत ईमानदारी से साहित्यिक मूल्यों के विकास का प्रयत्न किया, वहाँ दूसरा ऐसा भी वर्ग उसके बराबर आ खड़ा हुआ, जिसने केवल लिखने के लिए लिखा और सामान्य पाठक के लिए यह विवेक करना लगभग असम्भव कर दिया कि इन दोनों वर्गों की विभाजक रेखा कहाँ से आरम्भ होती है। इस पीढ़ी के उन लेखकों में जिन्होंने कहानी के स्वरूप का वास्तव में परिमार्जन और परिष्कार किया है और उसे जीवन की भूमि के अधिक निकट ला दिया है, हम चन्द्रकिरण सौनरिक्सा , भीष्म साहनी , धर्मवीर

भारती, राजेन्द्र यादव , मोहन चोपड़ा , कमल जोशी, कमलेश्वर, मार्कण्डेय और अमरकान्त आदि का उल्लेख कर सकते हैं। इनके अतिरिक्त और भी कई नाम लिये जा सकते हैं, परन्तु नाम-परिगणना हमारा उद्देश्य नहीं है। कहानी लेखकों की यह पीढ़ी कहानी के लिए निरन्तर नए-नए धरातल खोज रही है और इस नाते निरन्तर प्रयोगशील भी है , यद्यपि कविता की तरह यह प्रयोगशीलता शिल्पगत प्रयोगशीलता ही नहीं है। इस पीढ़ी के लेखक अपने को छोटे-मोटे व्यावसायिक आकर्षणों से बचाए रख सकें तो नि:सन्देह वे अभी बहुत कुछ कर सकते हैं।

आज नई पीढ़ी का लेखक जीवन के यथार्थ से या किन्हीं निश्चित विचारों से प्रेरणा लेकर ही चल रहा है। आज के प्रयोगों का क्षेत्र वह ग्रामीण जीवन भी है, जो धीरे-धीरे कुछ नए प्रभावों को आत्मसात् कर रहा है और जहाँ की परिस्थितियाँ और समस्याएँ प्रेमचन्द के समय से काफ़ी बदल गयी हैं, और वह नागरिक जीवन भी जो स्वयं अपनी ही खड़ी की हुई उलझनों से परेशान है और जिसमें द्वंदों और प्रतिद्वंदों की अनेकानेक धाराएँ फूटती रहती हैं। यदि सतह से देखा जाए तो भले ही वह जीवन शिथिल और गतिहीन प्रतीत हो , परन्तु बारीक निगाह से देखने पर शायद उसमें इतनी हलचल देखी जा सकती है , जितनी पहले कभी नहीं रही। इसका कारण है राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ और उनके साथ सम्बद्ध मूल्यों का जल्दी-जल्दी बदलना। जिस काल में परिस्थितियाँ हर तीन-चार वर्ष में जीवन को एक झटका दे जाती हों और एक साधारण सामाजिक व्यक्ति किसी निश्चित सूत्र को पकडक़र अपना सन्तुलन बनाये रखने में असमर्थ हो गया हो, जबकि व्यक्ति की योग्यता और जीवन में उसकी उपलब्धि का सम्बन्ध टूट गया हो, जबकि हर एक की भविष्य की खोज अन्धी गली में हाथ मारने की तरह हो , उस समय को छोडक़र एक लेखक के अध्ययन और चित्रण के लिए उपयुक्त और कौन समय हो सकता है?

निष्कर्ष:-

वास्तव में जीवन की संकुलता आज के कहानीकार के लिए एक चुनौती है। वह उस चुनौती को स्वीकार करे और इस पंकिल जीवन की गहराई में डुबकी लगाने का साहस करे तो वह रोम्या रोलाँ के 'मार्केट प्लेस ' जैसी रचना प्रस्तुत कर सकता है , या उससे भी कहीं अधिक बारीक रेखाएँ उघाडक़र रख सकता है , क्योंकि बीते हुए कल की साहित्यिक उपलब्धियाँ आज के लेखक के लिए आदर्श नहीं बल्कि आरम्भ का संकेत होती हैं। यह वह स्थान है जहाँ से उसकी दौड़ का श्रीगणेश होता है।

हमें यह खेद के साथ स्वीकार करना होगा कि जीवन के यथार्थ से प्रेरणा ग्रहण करते हुए भी हमारी आज की पीढ़ी उस यथार्थ के साथ पूरा न्याय नहीं कर सकी। बंगाल के अकाल से लेकर आज तक जीवन में इतने महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं कि उनकी प्रेरणा कितनी ही अमूल्य कृतियों को जन्म दे सकती थी। परन्तु हमारी इस पीढ़ी ने यथार्थ के अपेक्षाकृत ठहरे हुए अर्थात् पारिवारिक रूप को अपनी रचनाओं में अधिक स्थान दिया है और निरन्तर कुलबुलाते और संघर्ष करते हुए उसके सामाजिक पार्श्व की ओर कम ध्यान दिया है। यदि हम इस पीढ़ी के सामूहिक कृतित्व को सामने रख लें , तो यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि हमारे समय का एक बहुत व्यापक भाग अछूता रहा जा रहा है जिसकी पहचान और पकड़ हमारे लेखकीय दायित्व का अंग है।

साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। उसी कारण समाज में मूल्यों की जो स्थितियां है वहीं हम साहित्य में देखते है। बस किसी ने कहानी के माध्यम से तो किसी ने कविता या उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया है। इस प्रकार मूल्यों में आदर्शता , यथार्थता, विघटन, मूल्यों में गिरावट आयी है। इस विघटन का मुख्य कारण है पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण , औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, बढती आबादी।

संदर्भ सूची

1. उषा प्रियंवदा की कहानियों में टूटते जीवन मूल्यों का यथार्थ चित्रण, अविनाश महाजन, शैलजा प्रकाशन , कानपुर, पृ. 34
2. वही, पृ. 34
3. हिंदी कहानी अपनी जुबानी, डॉ. इंद्रनाथ मदान, पृ.31
4. युग क्या होते और नहीं ?,सुनीता जैन ,पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 39

RRIJM 2015, All Rights Reserved